Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 13th August 2019, Revised on 18th August 2019; Accepted 26th August 2019

शोध–पत्र

किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

* **सतीश चन्द सैनी,** *सहायक आचार्य*
एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर
Email-Satishchandsaini75@gmail.com, Mob- 9887543963

मुख्य शब्द – *संवेगात्मक, परिपक्वता, आदत, शैक्षिक उपलब्धि स्तर व अध्यापक आदि।*

सारांश

किशोर अपने बौद्धिक स्तर के अनुसार अधिगम व चिन्तन करते हो। किशोरावस्था में. बुद्धि की अहम् आवश्यकता है। उच्च बौद्धिक स्तर का किशोर प्रतिभाशाली होता है और समाज के मान्य कृत्यों को करता हुआ समायोजित हो जाता है। इसके विपरीत निम्न बौद्धिक स्तर का किशोर मन्द बुद्धि बालक होता है और किशोर असमायोजित होता हुआ कल्पना जगत में विचरण करता रहता है। बुद्धि का संवेग पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है और किशोर अपने संवेगात्मक परिपक्वता के आधार पर अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। संवेग की उग्रता किशोरावस्था की विशेषता है, यही तनाव, टकराव, माता–पिता से झगड़ा आदि के मांध्यम से परिलक्षित होता है। जिन किशोरों में संवेगात्मक परिपक्वता में स्थिरता होती है उनका प्रभाव उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ता है। यदि बालक में अच्छी आदतों का विकास होता है तो वह सफलतापूर्वक किसी भी कार्य को कर सकता है। इसके लिये विद्यालय, अध्यापक, माता–पिता, भाई–बहनों को मंहत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

प्रस्तावना

देश का उज्जवल भविष्य उस देश के बालकों के विकास पर निर्भर करता है। आज हमारे देश की शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें लोकतंत्र का सुयोग्य नागरिक बनाना है। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक बालक तर्क कर सकता हो, भेद कर सकता हो, समझ सकता हो और नई स्थिति का सामना भी कर सकता हो एवं शिक्षा के सभी औपचारिक व अनौपचारिक अभिकरण अपने अपने स्थान पर जागरूक हों। शिक्षा के अनौपचारिक अभिकरण में. बालक के घर का वातावरण प्रमुख है। बालक जो बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन संबंधी आदत व शैक्षिक उपलब्धियाँ व शैक्षिक निष्पादन भी इस बात पर निर्भर करती है कि उसका उपर्युक्त विकास किस वातावरण में हो रहा है।

आज शिक्षण संस्थाओं में जहाँ हम देखते हैं कि सभी बच्चों. में समान रूप से बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण करते समय उनकी बौद्धिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर में अन्तर दिखाई देता है, इस अन्तर को शिक्षण संस्थाय, शिक्षक और यहां तक की अभिभावक भी नहीं पहचान पाते हो।

समस्या अभिकथन

प्रस्तुत अध्ययन में **"किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता, शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का अध्ययन करना।
2. किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

3. किशोर विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना।
4. किशोर विद्यार्थियों में बौद्धिक स्तर की भिन्नता का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता, शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर की भिन्नता का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता, शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

प्रस्तुत अध्ययन की प्राक्कल्पनाएँ

शोधकर्ता ने संबंधित उद्देश्यों को ध्यान में. रखकर निम्नलिखित प्राक्कलपनाओं का निर्माण किया है –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. के बौद्धिक स्तर में भिन्नताएँ हो।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियो की संवेगात्मक परिपक्वता में. कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक के आयाम संवेगात्मक अस्थिरता में. कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम संवेगात्मक प्रतिगमन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थिया. की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक कुसमायोजन में. कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम व्यक्तित्व विघटन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम स्वतंत्रता का अभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में. कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्रा के बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
13. गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा के बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
14. सरकारी विद्यालयों. की किशोर छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं संवेगानात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
15. गैर सरकारी विद्यालयों. की किशोर छात्राओं. के बौद्धिक स्तर एवं संवेगानात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

16. सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा. के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
17. गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मंध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
18. सरकारी विद्यालयों. की किशोर छात्राआ के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
19. गैर सरकारी विद्यालयों. की किशोर छात्राओं. के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन के चर

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित स्वतंत्र व आश्रित चर हो।

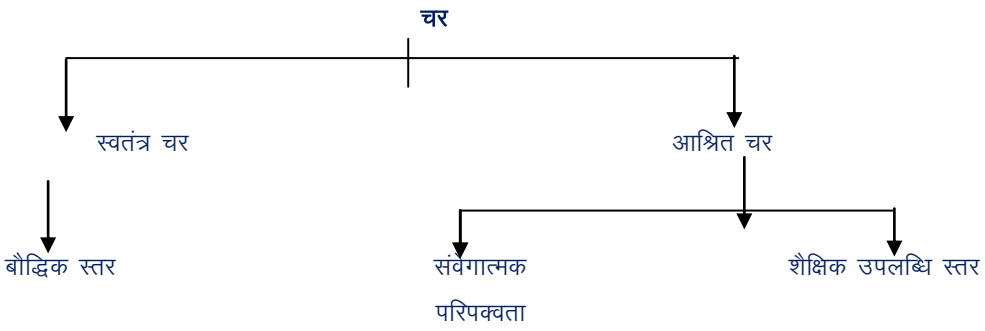

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली

(1) शैशवावस्था

शिशु के जन्म से लेकर 5 वर्ष की आयु तक की अवधि को शैशवावस्था कहा जाता है।

(2) बाल्यावस्था

शैशवावस्था के बाद बालक बाल्यावस्था में प्रवेश करता है। मनुष्य जीवन काल क्रम में 6 वर्ष की आयु से 11 वर्ष की आयु तक की अवस्था है।

(3) किशोरावस्था

किशोरावस्था में मनुष्य जीवन काल क्रम में 12 वर्ष की आयु से लेकर 18 वर्ष की आयु तक की अवस्था है।

कुल्हण के अनुसार – "किशोरावस्था बाल्यकाल तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का परिवर्तन काल है।"

स्टेनले हॉल – "किशोरावस्था को दबाव, तनाव तथा संघर्ष की अवस्था कहा है।"

(4) बौद्धिक स्तर

बिने – "निर्णय, सद्भावना, उपकरण समझने की योग्यता, युक्तियुक्त तर्क और वातावरण में. अपने को व्यवस्थित करने की शक्ति ही बुद्धि है।"

टरमन – "एक व्यक्ति उसी अनुपात में. बृद्धिशील है जिस अनुपात में. उसमें. अमूर्त चिन्तन की क्षमता है।"

(5) संवेगात्मक परिपक्वता

संवेगात्मक परिपक्वता का सम्बन्ध उस वयस्क के संवेगात्मक प्रतिमान से है जो संवेग की अवस्था को पार कर चुका है। यह बचपन व किशोरावस्था की विशेषता है। संवेगात्मक परिपक्वता हर विद्यालय व समाज में भूमिका में. होने वाले परिवर्तन, घर में. प्रतिकूल संबंधों के होने, सामाजिक अपेक्षाओं. का सामना करने, विपरीत लिंग के साथ समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ सामने आने, धार्मिक द्वन्द्व होने, विद्यालय में. असफलताओं. के मिलने, परिवार के सदस्यों. व मित्रों. से द्वन्द्व होने, व्यावसायिक समस्याओं. का सामना करने आदि के कारण उग्र हो जाती है। किशोरों. में. संवेग, प्रेम, स्नेह, चिंता, डर, क्रोध आदि के कारण उद्वेलित होते हो।

चामबैरटिअन – "ये वे व्यक्ति होते हो जिनका सांवेगिक जीवन पूर्णतया नियंत्रण में. होता है। ऐसे व्यक्ति अत्यधिक क्रोध, अनुचित डर, अनुचित रूप से मिजाज बिगड़ना या अतिवादी नहीं होते हो। एक परिपक्व व्यक्ति शान्त प्रवृत्ति वाला रोजमर्रा के जीवन की विभिन्न परिस्थितियो. की अनिवार्यताओं. का आसानी से सामना कर सकता है।"

किशोरों में कार्य करने, सफलता प्राप्त करने और बाधाओं. पर विजय पाने के संकल्प को अध्ययन आदतों में प्रोत्साहित करती हो।

(7) शैक्षिक उपलब्धि स्तर

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में. प्राप्त परिणामों. से होता है। दूसरे शब्दों में. विद्यार्थियों. द्वारा की जाने वाली कक्षाओं. की शिक्षण के परिणामों. को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं।

अध्ययन की परिसीमांएँ

1. वर्तमान अध्ययन हेतु भारत के उत्तर, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण में. से केवल उत्तर क्षेत्र (जयपुर) के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों को चुना गया है।
2. जयपुर शहर के पाँच सरकारी व पाँच गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों को आंकड़ों. के लिये चुना गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन किशोर विद्यार्थियों. पर किया गया है जिनकी आयु 14 से 18 वर्ष तक की है।
4. न्यादर्श के रूप में 300 छात्र व 300 छात्राओं. को चुना गया है।
5. किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का अध्ययन किया गया है।
6. किशोर विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता, शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।
7. सर्वेक्षण विधि का प्रयोग अध्ययन में किया गया है।
8. उपकरण के रूप में बौद्धिक सतर के लिये डॉ. एस. जलोटा द्वारा निर्मित परीक्षण लिया गया है।
9. संवेगात्मक परिपक्वता के लिये डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित परीक्षण लिया गया है।
10. अध्ययन संबंधी आदतों. की सूची हेतु डॉ. एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल द्वारा निर्मित परीक्षण लिया गया है।
11. शैक्षिक उपलब्धि स्तर मापने के लिये विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को लिया गया है।
12. सांख्यिकी के रूप में. "काई वर्ग", "टी परीक्षण" एवं "सहसम्बंध" का प्रयोग किया गया है।

अनुसंधान की विधि

अनुसंधान समस्या की प्रकृति तथा प्रस्तावित उद्देश्यों. के स्वरूप को देखते हुए शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

इसलिये इन विद्यालयों. में से एक प्रतिशत के मध्य 5 सरकारी व 5 गैर सरकारी विद्यालयों. के 600 विद्यार्थिया में 300 छात्र व 300 छात्राओं को अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में. चुना जिनकी आयु 14 से 18 वर्ष हैं।

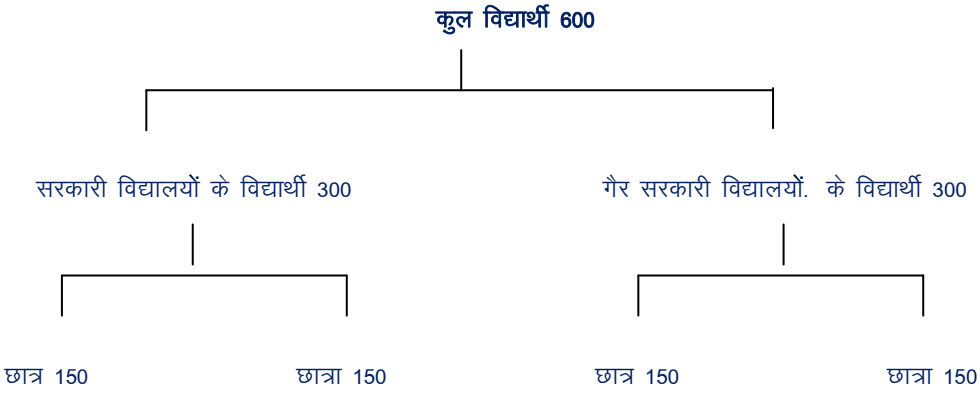

प्रयुक्त उपकरण

निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. बौद्धिक स्तर मापने हेतु – डॉ. एस. जलोटा द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण।
2. संवेगात्मक परिपक्वता मांपने हेतु – डॉ. यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (ई.एस. एम.)
3. शैक्षिक उपलब्धि स्तर मापन हेतु – किशोर विद्यार्थियों. के वार्षिक परीक्षा के उच्च व निम्न प्राप्तांकों के आधार पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि स्तर मापा जायेगा।
4. **प्रयुक्त सांख्यिकी** –प्रस्तुत शोध अध्ययन से संबंधित परीक्षणों का विधिवत् प्रशासन करके विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में. प्रयुक्त की गई सांख्यिकी इस प्रकार है –

(अ) मध्यमान (M) (ब) मानक विचलन (S.D.)

(स) टी परीक्षण (t) (द)सहसम्बन्ध (r) (य) काई वर्ग (x)

शोध के निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा अपने उद्देश्यों. को ध्यान में. रखते हुए बनाई गई परिकल्पनाओं. के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

परिकल्पना – 1

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. के बौद्धिक स्तर में. समानता है। निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थिया. के निम्न, सामान्य एवं उच्च बौद्धिक स्तरों. में. भिन्नताएँ नहीं है।

परिकल्पना – 2

सरकारी विद्यालयों. एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक परिपक्वता में. समानता नही है।निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थी मानसिक उलझन में. फंसे रहने में, अपने लक्ष्य की प्राप्ति न होने पर अपने में. हीनता महसूस करने में, लोगों. दृष्टि में. अविश्वसनीय समझने में. सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों. की तुलना में भिन्नता रखते हो।

परिकल्पना – 3

सरकारी विद्यालयों. एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम संवेगात्मक अस्थिरता में. समानता नहीं है। निष्कर्ष निकलता है कि

गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी आने वाली परिस्थितियों. से घबराने में. , अपने में चिड़चिड़ापन महसूस करने में, दूसरे लोगों से ईर्ष्या महसूस करने में सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों. की तुलना में. भिन्नता रखते हो।

परिकल्पना – 4

सरकारी विद्यालयों. एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम संवेगात्मक प्रतिगमन में समानता नहीं है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी अपने में. बेचैनी अनुभव करते हो और दूसरा. से शिकायत करने में तथा अपने दोष दूसरे के सिर मढ़ देने का प्रयत्न करते हैं। अपने को आत्म–असन्तुष्ट अनुभव करने में. सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की तुलना में. भिन्नता रखते हो।

परिकल्पना – 5

सरकारी विद्यालयों एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम सामाजिक कुसमयोजन में समानता है। निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थी मित्र. एवं साथ के व्यक्तियों. से सामजस्य नहीं बैठाने में, अन्य व्यक्तियों से घृणा करने में, झूठ बोल देने में. और अकेलेपन को ही अधिक पसन्द करने में. समानता रखते हो।

परिकल्पना – 6

सरकारी विद्यालयों. एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम व्यक्तित्व विघटन में. समानता नहीं है। निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थी किसी कार्य को चाहते हुए भी न जानने का बहाना करने में, अपने को न्यायोचित ठहराने में, नैतिक नियमो. की परवाह न कर मनमज करने में और दूसरे व्यक्ति के विचारों. से असहमत रहने में सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में. भिन्नता रखते हैं।

परिकल्पना – 7

सरकारी विद्यालयों. एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम स्वतन्त्रता का अभाव के मध्यमानों में समानता है। निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी अपने समूह के विचारों से असहमत रहने में, दूसरों के कार्यों में रूचि नहीं दिखाने में, अपने कार्यों को अन्य व्यक्तियों. के कार्यों की अपेक्षा अधिक महत्व देने में समानता रखते हैं।

परिकल्पना – 8

सरकारी विद्यालयों. एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थियों. की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में. समानता है। निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि स्तर में भिन्नता नहीं रखते हो।

परिकल्पना – 9

उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में. समानता है। निष्कर्ष निकलता है कि दोनों. समूहों. के संवेगात्मक परिपक्वता स्तरों. में. भिन्नता नहीं है।

परिकल्पना – 10

उच्च एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में. समानता नहीं है। निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि के स्तरों में. भिन्नता है।

परिकल्पना – 11

सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा के बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है। निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्रों के बौद्धिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव कम पड़ता है।

परिकल्पना – 12

गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रों के बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है। निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा के बौद्धिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव कम पड़ता है।

परिकल्पना – 13

सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्राओं. के बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्राओं के बौद्धिक स्तर का संवेगात्म्क परिपक्वता पर प्रभाव अधिक पड़ता है।

परिकल्पना – 14

गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्राओं के बौद्धिक स्तर का संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव कम पड़ता है।

परिकल्पना – 15

सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा. के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रों. के बौद्धिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव कम पड़ता है।

परिकल्पना – 16

गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्रा के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सहसम्बन्ध है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्रों. के बौद्धिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव अधिक पड़ता है।

परिकल्पना – 17

सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सहसम्बन्ध नहीं है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्राआ. के बौद्धिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव कम पड़ता है।

परिकल्पना – 18

गैर सरकारी विद्यालयों. के किशोर छात्राओं. के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर के मध्य सहसम्बन्ध है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर छात्राओं के बौद्धिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर प्रभाव अधिक पड़ता है।

भावी अध्ययन के लिये सुझाव

वर्तमान समस्या से संबंधित ऐसे कई पक्ष थे जो कि शोधकर्ता के द्वारा अछूते रह गये हो, ये पक्ष निम्नलिखित हो –

1. अग्रिम अध्ययन के लिये जयपुर के अलावा अन्य क्षेत्रा के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियो को सम्मिलित कर न्यादर्श का आकार बढ़ाकर अनुसंधान का क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अलावा विश्वविद्यालयी स्तर के बालकों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में बौद्धिक स्तर पर संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर का प्रभाव देखा गया है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के व्यक्तित्व, रूचि, आकांक्षा स्तर, आत्म सम्बोध, समायोजन आदि का प्रभाव भी देखा जा सकता है।
4. बौद्धिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जा सकता है।

5. यह अध्ययन विद्यालय–महाविद्यालयों के मध्य, शहरी व ग्रामीणा के मध्य शिक्षित तथा अशिक्षित एवं अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के मध्य तुलनात्मक रूप से किया जा सकता है।

6. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण की भिन्नता का उनकी बुद्धि, संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदतों एवं सृजनात्मकता के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

7. वर्तमान अध्ययन माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं पर किया गया है। भावी अध्ययन बी.एड. व एस.टी.सी. शिक्षण प्रशिक्षण व व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले किशोरों के व्यक्तिगत गुण, उपलब्धि अभिप्रेरणा व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

8. अध्ययन आदता एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जा सकता है।

9. वर्तमान अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर के किशोरों पर किया गया है। भावी शोध में प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालया के बालकों के बौद्धिक स्तर का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता, अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

10. भावी अनुसंधान म अन्य मनोसामाजिक चरा व संस्थाओं को सम्मिलित किया जा सकता है। पब्लिक स्कूला में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की आकांक्षा, अभिप्रेरणा व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	आहूजा, आर.	:	रिसर्च मैथड्स, न्यू देहली, रावत पब्लिशर्स, 2001
2.	अर्नोल्ड, एम.बी.	:	इमोशनल एण्ड पर्सनल्टी, न्यूयार्क कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस 1960
3.	ऑलपोर्ट जी.डब्ल्यू.	:	पैटर्न एण्ड ग्रोथ इन पर्सनैलिटी, न्यूयार्क हॉल्ट रिनहार्ट एण्ड विन्सटन 1961
4.	एडम्स हेनरी ई.	:	साइकोलोजी ऑफ एडजस्टम. ट, द रोनाल्ड प्रेस कम्पनी, न्यूयार्क 1972
5.	एल. हंस देवकीनन्दन	:	सांख्यिकी के सिद्धान्त, पृ. 5
6.	बिने	:	(मेस्यूरम. ट ऑफ इंटेलीजेन्स, पृ. 42, 43 1916)
7.	बेकर एच.जे.	:	इन्ट्रोडक्शन टू एक्सप्टेशनल चिल्ड्रन, दी मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क, 1959
8.	बेस्ट जॉन डब्ल्यू	:	रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू देहली, प्रिंटस हॉल इण्डिया कम्पनी, 1963
9.	बेस्ट जॉन डब्ल्यू एण्ड खान जेम्स बी.	:	रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिंटस हॉल ऑफ इण्डिया, न्यू देहली, टप्प एडी. 1996
10.	ब्लेयर जोन्स एवं सिम्पसन	:	एजूकेशन साइकोलोजी मैकमिलन, 1962

*** Corresponding Author:**
सतीश चन्द सैनी, *सहायक आचार्य*
एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर
Email-Satishchandsaini75@gmail.com, Mob- 9887543963